जन्मदिन पर विशेष

भारतीय उद्योग एवं व्यापार जगत की बड़ी हस्ती

रांची: रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड के समूह अध्यक्ष (निगमित सेवाएं) एवं राज्यसभा सांसद परिमल नथवाणी उद्योग एवं व्यापार जगत की नामचीन हस्ती माने जाते हैं। गुजरात के एक छोटे से गांव में एक फरवरी 1956 को जन्म लेने वाले परिमल नथवाणी को रिलायंस इंडस्ट्रीज का चेहरा माना जाता है। परिमल नथवाणी ने साबुन बनाने से लेकर शेयर बाजार में भी काम किया। साथ-साथ खुद इसकी मार्केटिंग की। 1995 में धीरूभाई अंबानी एवं मुकेश अंबानी के साथ उनकी मुलाकात ने उनका जीवन बदल दिया। भारत के पूंजी बाजार के पितामह धीरूभाई अंबानी ने नथवाणी को उस समय अपने साथ जोड़ा जब रिलायंस ने जामनगर में देश की सबसे बड़ी रिफाइनरी की स्थापना की योजना बनायी।

एक तरह से नथवाणी ने धीरूभाई के सपने को पूरा करने में सहायता की। सबसे बड़ी रिफाइनरी की स्थापना की योजना बनायी। रिफाइनरी की स्थापना में सबसे बड़ी बाधा जमीन अधिग्रहण की थी। यह उनके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण समय था। जमीन अधिग्रहण कठिन काम था। लेकिन नथवाणी ने दिन रात काम किया। उन्होंने किसानों से बातचीत की। उन्होंने 10 हजार एकड़ जमीन अधिग्रहण में सहयोग के लिए हर किसान से व्यक्तिगत संबंध बनाया। रिफाइनरी की स्थापना के लिए विशाल आधारभूत संरचना विकसित करना एक बड़ी चुनौती थी जिसे नथवाणी ने स्वीकार किया और पूरा कर दिखाया।

जामनगर की सफलता के कारण रिलायंस ने नथवाणी को 1997 में बृहत रूप में पेश किया। जिसमें वह कंपनी की अपेक्षाओं के अनुरूप खरे उतरे।

इस दौरान नथवाणी रिलायंस इंडस्ट्रीज का चेहरा बन कर उभरे। उन्होंने ग्रुप की कई परियोजनाओं को हाथ में लिया जिनमें जामनगर रिफाइनरी, पेट्रोलियम खुदरा आउटलेटों की स्थापना तथा जामनगर विशेष क्षेत्र की स्थापना शामिल है। उन्होंने पूर्ववर्ती रिलायंस टेलीम नेटवर्क और गैस परिवहन पाइपलाइन नेटवर्क तैयार करने में अहम भूमिका निभायी। रिलायंस के उपभोक्ता खुदरा की श्रृंखला तैयार करने में भी नथवाणी का योगदान रहा। वस्तुत: परिमल नथवाणी मुकेश अंबानी की रिलायंस

■ जामनगर से झारखंड एवं द्वारका से दिल्ली तक का सफर

इंडस्ट्रीज लिमिटेड के संकट मोचक बन गए। कल्याणकारी कार्य करना उनके जीवन का हिस्सा रहा है। 2001 में जब गुजरात में भूकंप आया तब वह धीरूभाई के कहने पर भूकंप पीड़ितों की सहायता के लिए कच्छ पहुंच गए। मुकेश अंबानी के दिशा-निर्देश पर नथवाणी ने भूकंप पीड़ितों की सहायता के लिए दिन रात काम किया। 2008 में जब नथवाणी झारखंड से राज्यसभा का चुनाव लड़ने आए तो उन्हें बाहरी व्यक्ति बताया गया। उनके बारे में यही चर्चा होती रही कि राज्यसभा के अन्य बाहरी सदस्यों की तरह नथवाणी भी चुनाव में विजयी होने के बाद वापस झारखंड नहीं आएंगे परन्तु उन्होंने इसे झुठला दिया परिमल नथवाणी का जन्म गुजरात में हुआ परन्तु झारखंड को उन्होंने दूसरा घर बनाया। जब भी अवसर मिलता है वह झारखंड आ जाते हैं। नथवाणी ने रांची में अपना कार्यालय खोल रखा है जहां से उनके द्वारा कल्याणकारी कार्यों का संचालन किया जाता है। नथवाणी झारखंड के आदिवासी बहुल गांवों में सांसद कोष एवं धीरूभाई अंबानी फाउंडेशन की ओर से कल्याणकारी कार्य करते रहते है। अपनी तरफ से भी राशि खर्च करते हैं। उन्होंने इस्लामनगर में पेयजल एवं सफाई व्यवस्था करायी परन्तु दुर्भाग्य से अतिक्रमण हटाने के नाम पर इस्लामनगर को जमींदोज कर दिया गया जिसका उन्हें गम है।

परिमल नथवाणी ने जामनगर से झारखंड एवं द्वारका से दिल्ली तक का सफर एक रात में तय नहीं किया। उनकी प्रतिबद्धता, लगन एवं विश्वास ने उन्हें यहां तक पहुंचाया। परिमल नथवाणी क्रिकेट के दिवाने है। क्रिकेट के लिए वह स्कूल से गायब हो जाते थे। क्रिकेट खेलने के कारण नथवाणी की आंख में चोट लगी थी। प्रख्यात फिरकी गेंदबाज इरापल्ली प्रसन्ना की पुस्तक 'वन मोर ओवर' नथवाणी की पसंदीदा पुस्तक है।

भगवान कृष्ण के भक्त परिमल नथवाणी को द्वारका एवं श्री नाथद्वारा के जैसे धार्मिक स्थलों के लिए कुछ करने की प्रेरणा मिलती है।

द्वारका एवं द्वारकाधीश पर हर वर्ष उनका एक कैलेंडर आता है। परिमल नथवाणी एक अत्यंत सरल एवं मृदु भाषी व्यक्ति हैं। जब वह कोई गलती करते हैं तो उसे सहर्ष स्वीकार भी कर लेते हैं।

झारखंड से राज्यसभा सांसद बनने के बाद वह सदन में राज्य की समस्याओं को उठाते रहते हैं।

प्रस्तुति : पूरनचन्द्र

राँची एक्सप्रेस पृ. 12
दि. 01/02/2013